Monad University Hapur
Faculty of Law
Subject - Legal education and Research methodology
Topic - Research methodology
Sub topic - परिकल्पना

परिकल्पना

1. परिकल्पना की परिभाषा और अर्थ:

परिकल्पना को आमतौर पर शोध कार्य का महत्वपूर्ण तंत्र माना जाता है। परिकल्पना एक अस्थायी धारणा है जो इसके तार्किक या शोध आधारित अनुभवजन्य परिणामों का परीक्षण करने के लिए बनाई गई है। परिकल्पना के बिना शोध को एक कदम भी आगे बदना असम्भव है। जब शोध में अच्छी परिकल्पना का निर्माण होता है तो शोध का आधा कार्य पूर्ण हो जाता है । परिकल्पना शोध व् सिद्धांत के बीच की कड़ी है जो अतिरिक्त व् नये ज्ञान की खोज में सहायक है । सामाजिक व् विधिक शोध में परिकल्पना का विशेष महत्व होता ।

परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ है पूर्व विचार या पूर्व सिद्धांत। यह एक ऐसा विचार है जिसके आधार पर शोधकर्ता अपने शोध के अध्धयन के लक्ष्य को तय करता है तथा उसकी जाँच करता है। शोध के निष्कर्ष में परिकल्पना को सत्य सिद्ध होने पर एक सिद्धांत के रूप में लागु करता है।

- परिकल्पना एक अस्थायी औचित्य है, जिसकी वैधता का परीक्षण किया जाना बाकी है। इसकी सबसे प्रारंभिक अवस्था में परिकल्पना कोई अनुमान, कल्पनाशील विचार हो सकता है, जो कार्रवाई या शोध जांच का आधार बन जाता है।
- परिकल्पना एक ऐसी प्रस्थपना है जिसकी सत्यता को सिद्ध करने के लिए उसकी परीक्षा की जाती है।
- परिकल्पना परीक्षण के लिए प्रस्तुत की गयी एक प्रस्थपना है

संक्षेप में, हम परिकल्पना को एक अस्थायी कथन के रूप में परिभाषित कर सकते हैं जो आमतौर पर कारण प्रभाव संबंध के रूप में दो या दो से अधिक चर के बीच संबंधों की प्रकृति को व्यक्त करता है।

2.परिकल्पना की विशेषताएं:

एक अच्छी परिकल्पना वह है जो परीक्षण योग्य है और मौजूदा डेटा पर सीधे आधारित होनी चाहिए।

1. परिकल्पना विशिष्ट होनी चाहिए।
2. परिकल्पना सत्यापित होने में सक्षम होनी चाहिए।
3. परिकल्पना में तार्किक सरलता होनी चाहिए।
4. परिकल्पना गैर-विरोधाभासी होनी चाहिए।
5. अनावश्यक रूप से अधिक कारको को शोध में शामिल नहीं किया जाना चाहिए।
6. परिकल्पना सरल भी होनी चाहिय किन्तु बहुत अधिक सरल नही होनी चाहिय ।

3. शोध परिकल्पना के प्रकार:

i. सामान्य परिकल्पना
ii. जटिल परिकल्पना
iii. सांख्यिकीय परिकल्पना
iv अस्थायी हाइपोथीसिस

4. परिकल्पना के स्रोत:

एक अच्छी परिकल्पना शोध में अनुभव से प्राप्त की जा सकती है। हालांकि परिकल्पना को आकड़ो के संग्रह से पहले होना चाहिए, लेकिन डेटा संग्रह, साहित्य समीक्षा या त्वरित अध्ययन परिकल्पना के विकास और क्रमिक शोध में मदद करते है ।

5 परिकल्पना का महत्व :

i. यह समस्याओं के व्यख्या में सहायक होती है
ii. यह अध्यन की दिशा में सहायक होती है
iii. यह अध्यन क्षेत्र की सीमितता व् चयन में सहायक होती है

iv. तर्क सांगत निष्कर्ष में सहायक होती है
v. सिन्धंत निर्माण में सहायक होती है

6. शून्य परिकल्पना:

शून्य परिकल्पना वह है जब शोध के परिणाम पूर्व में तय की गयी परिकल्पना के विपरीत आते है। जब किसी परिकल्पना को जब किसी परिकल्पना के परिणाम नकारत्मक आते है है तो इसे अशक्त परिकल्पना कहा जाता है। अशक्त परिकल्पना एक परीक्षण योग्य परिकल्पना है। यह सटीक है। अशक्त परिकल्पना वह परिकल्पना है जिसे शोधकर्ता अस्वीकार करने का प्रयास कर रहा है।

Sources

http://epgp.inflibnet.ac.in/epgpdata/uploads/epgp_content/law/09._research_methodology/07._hypothesis/et/8153_et_et.pdf

https://www.researchgate.net/publication/325846748_FORMULATING_AND_TESTING_HYPOTHESIS

Dr. S. R. Myneni, Legal Research Methodology, Allahabad Law Agency (2004)